रजिस्ट्रेषन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– Kanpur City – 67/2015–2017

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में
सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127/204 'एस' जूही, कानपुर–208014

वर्ष –38 ● अंक –15 ● कानपुर 1 से 15 अगस्त 2016 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य – ₹100

विकास की गति बहुत तेज़ होगी

- विकास को वास्तविक रुप से परिभाषित करना
- बातों को नहीं अब काम को दी जायेगी तरजीह
- कार्य संस्कृति का होगा सम्मान
- मान्यता तक नहीं रुकेगा विकास का पहिया
- अपरिवर्तनीय रहेगी कार्य करने की पद्धति
- क्लीनिकल इस्टैब्लिशमेंट एक्ट से भागना नहीं है
- बौद्धिक सम्पदा का परिवर्धन किया जायेगा

इलेक्ट्रो होम्योपैथी – इलेक्ट्रो होम्योपैथी ही बनी रहे इसलिए आवश्यक है कि इस स्थापित चिकित्सा पद्धति का वास्तविक विकास किया जाये और विकास का स्वरूप कुछ इस तरह का हो जिसका लाभ आमजन भी उठा सकें तभी इलेक्ट्रो होम्योपैथी को विकसित किया जा सकता है।

वर्तमान समय में इलेक्ट्रो होम्योपैथी में जो कुछ भी चल रहा है वह कुछ सामान्य सा नहीं है विकास के नाम पर बड़ी बड़ी बातें की जाती हैं बड़े बड़े दावे किये जाते हैं लेकिन जब यर्थाथ के धरातल पर परीक्षण होता है तो जो परिणाम आते हैं वह हमें चकित कर देते हैं केवल उत्तर प्रदेश की बात न करके यदि हम सम्पूर्ण भारत पर एक दृष्टि डालें तो एक बात एकदम स्पष्ट रूप से नजर आती है कि विकास का जो बहाव वास्तविक होना चाहिये वह नहीं हो रहा है यह हम सब के लिये सोचने का विषय है इन्हीं सब बिन्दुओं पर चिन्तन करने के बाद बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 की प्रबन्ध कमेटी ने यह निणर्य लिया कि शीर्ष ही ऐसा कोई नीतिगत निर्णय लिया जाये जिसपर कार्य करते हुए इलेक्ट्रो होम्योपैथी का वास्तविक विकास हो सके।

यदि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को समाज में प्रभावी ढंग से स्थापित करना है तो यह आवश्यक है कि इस चिकित्सा पद्धति का लाभ कुछ व्यक्तियों तक न रहकर सर्वसमाज को मिले कहने को तो कहा जाता है कि जितने भी आसाध्य रोग हैं उनपर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति का ज़बरदस्त प्रभाव है जैसा कि पढ़ा और पढ़ाया जाता है उसके अनुसार यह चिकित्सा पद्धति सामान्य से लेकर असाध्य एवं गम्भीर रोगों पर अधिक प्रभावी है लेकिन जिन लोगों द्वारा इस चिकित्सा पद्धति को व्यवहार में लाया जाता है उनकी संख्या बहुत सीमित है किसी भी चिकित्सा पद्धति के विकास के लिए यह अति आवश्यक होता है कि उस चिकित्सा पद्धति को व्यवहार में लाने वाले लोगों की संख्या अधिकाधिक हो, हमें याद करना चाहिये कि आज से 35–40 साल पहले जब होम्योपैथी का इतना प्रसार नहीं हुआ था तब जगह जगह पर इस चिकित्सा पद्धति के चिकित्सक रोगियों को स्वतः औषधियों को सेवन करने के लिए प्रेरित करते थे चूंकि मामला शरीर से जुड़ा होता है इसलिए कोई भी व्यक्ति आसानी से किसी भी औषधि को स्वीकार नहीं करता है तब उसे यह बताया जाता था कि यह औषधियां यदि लाभ नहीं करेंगी तो हानि भी नहीं करेंगी आज युग बदल चुका है हर क्षेत्र में ज़बरदस्त परिवर्तन हो चुका है। चिकित्सा के क्षेत्र में बड़े क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं ऐसे में यदि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को समान रूप से स्थापित करना है तो चिकित्सा के क्षेत्र में बहुत कार्य होना चाहिये हमारे पास जो लाखों की संख्या है उन्हें अपने दायित्वों को पहचानना होगा और दायित्वों का पालन करते हुये एक नई कार्य संस्कृति को जन्म देना होगा, यदि हम इलेक्ट्रो होम्योपैथी में विकास की बात करें तो इससे हम इन्कार नहीं कर सकते हैं कि चिकित्सा पद्धति का विकास नहीं हुआ है, लेकिन जो संतुलित और समन्वित विकास होना चाहिये वह नहीं हो पा रहा है। यदि हम इसके कारणों पर जायें तो कारण अनेक दृष्टिगोचर होंगे परन्तु यदि हम पूर्ववर्ती कारणों को लेकर ही बातें करते रहे तो विकास दूर–दूर तक नहीं हो सकता है।

यह कटु सत्य है कि 2003 से 2012 तक का काल खण्ड इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये बहुत कठिन रहा है लेकिन जिस सूझ–बूझ से इलेक्ट्रो होम्योपैथी के नायकों नें इस चिकित्सा पद्धति को कार्य करने का एक अवसर दिलाया है तो हम सभी का यह कर्तव्य है कि हम इस प्राप्त अवसर का भरपूर लाभ उठायें जो बीत गया उस पर ही चर्चा करने से अच्छा है कि आगे की सोचें, वर्तमान युग प्रतिस्पर्धा का युग है, प्रतिस्पर्धा में वही टिकता है जिसके पास बौद्धिक सम्पदा का भण्डारण हो, इलेक्ट्रो होम्योपैथी में बौद्धिक सम्पदा की कोई कमी नहीं है परन्तु इस सम्पदा का अभी भी पूर्ण रुप से प्रयोग नहीं हो पा रहा है हमारे चिकित्सकों के मन में पता नहीं कौन सी हीन भावना ने जन्म ले लिया है जिसके कारण वे अपनी पूरी क्षमता के साथ अपना कौशल प्रदर्शित नहीं कर पा रहे हैं, जो चिकित्सक अपने चिकित्सा व्यवसाय में शुद्ध इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति व्यवहार में ला रहे हैं उन्हें आशातीत सफ़लता प्राप्त हो रही है एवं परिणाम भी अच्छे मिल रहे हैं, इन प्राप्त परिणामों से चिकित्सकों में उत्साह का भाव जागृत हुआ है।

पहले की तुलना में अब औषधियों की कमी नहीं है लगभग हर शहर में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक की औषधियां उपलब्ध हैं, हमारे कुछ औषधि निर्माताओं ने लूज़ टैब्लेट और स्ट्रिप्स के स्वरुप में अपने उत्पादन प्रस्तुत कर चिकित्सकों को और भी अधिक प्रतिस्पर्धी बना दिया है मूल औषधियों के साथ–साथ इस स्वरुप की औषधियों का प्रयोग चिकित्सक रोगी पर करता है और परिणाम भी अच्छे प्राप्त कर रहा है मगर इस प्रकार के कार्य करने वाले चिकित्सकों की संख्या का प्रतिशत हमें बढ़ाना है जब चिकित्सा पद्धति का प्रभाव सामान्य जन स्वंय अनुभव करेगा तो इस चिकित्सा पद्धति के विकास में ज़्यादा समय नहीं लगेगा।

एक क्षेत्र ऐसा है जिसपर कार्य होना है और वह क्षेत्र है हमारी शिक्षण व्यवस्था समय के परिवर्तन को देखते हुये बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने कड़े कदम उठाते हुये अपने हर इन्सटीट्यूट को निर्देश दिया है कि अध्यापन पर अधिकाधिक ध्यान दिया जाये एवं छात्र की उपस्थिति भी अधिकतम हो दूसरे वर्ष से छात्रों को व्यवहारिक ज्ञान भी उपलब्ध कराया जाये इसी के साथ–साथ बोर्ड ने यह भी योजना बनाई है कि विद्यालयों में जो अध्यापक अध्यापन कर रहे हैं उन्हें रिफ्रेशर कोर्स कराया जायेगा जिससे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी में हो रही नवीन जानकारियों से वे अपडेट रहें ताकि छात्रों को बिलकुल नवीन शोधों एवं जानकारियों से अवगत करा सकें जब–जब मान्यता की बात उठाकर आन्दोलन की बात चिकित्सकों से की जाती है तो हर चिकित्सक को यह समझाया जायेगा कि केन्द्र सरकार मान्यता निश्चित रुप से देगी लेकिन मान्यता के लिये सड़को पर उतरकर आन्दोलन की अपेक्षा अपनी क्लीनिकों में बैठकर कार्य संस्कृति पनपाने का आन्दोलन किया जाये तो विकास की गति ज़्यादा तेज़ी से बढ़ेगी चिकित्सकों के मन में जो निराशा का भाव है वह कार्य से ही दूर होगा ऐसा नहीं है कि कार्य नहीं हो रहा है कार्यसंस्कृति बड़ी तेजी के साथ बदल रही है गुज़रे दो वर्षों में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति से चिकित्सा व्यवसाय करने वाले चिकित्सकों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हुयी है यह किसी भी चिकित्सा पद्धति के विकास के शुभ संकेत हैं। जो चिकित्सक अभी भी अन्य विधा प्रयोग में लाते हैं उनके अन्दर भी एक नई ऊर्जा का संचार हो रहा है और यह चिकित्सक भी अब इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा विधा से चिकित्सा करने का मन बना रहे हैं, हम आश्वस्त हैं कि धीरे– धीरे हमारी यह श्रंखला बहुत बड़ी और मज़बूत होगी तब इलेक्ट्रो होम्योपैथी किसी भी चुनौती को आसानी से स्वीकार कर लेगी। जब–जब नये शोधों की बात होती है तब हम गर्व से कह सकते हैं।

हमारे पास किसी भी प्रकार का कोई सरकारी अनुदान नहीं आता है इसके उपरान्त भी हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथ निजी संसाधनों के बल पर शोध कार्य में लगे हुये हैं, शोधार्थियों को परिणाम भी अच्छे मिल रहे हैं यदि सरकार का थोड़ा सहयोग और समर्थन मिल जाये तो हमारे शोधार्थी किसी से कम उपयोगी नहीं रहेंगे।

सरकार के सहयोग और समर्थन के लिये इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया निरन्तर प्रयासशील है, भारत सरकार एवं राज्य सरकारों से इस विषय पर पत्र व्यवहार हो रहा है जहाँ कहीं भी भौतिक सम्पर्क की आवश्यकता होती है वह भी किया जा रहा है, उ0प्र0 में जो क्लीनिकल स्टैब्लिशमेंट रुल लागू होना है हमें उससे भागना नहीं है, इस नियम के अन्तर्गत इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति को समाहित करवाना इस समय हमारी प्रमुख प्राथमिकता है क्योंकि यदि प्रदेश में अधिकार पूर्वक कार्य करना है तो राज्य में प्रचलित कानूनों का पालन करना हमारा कर्तव्य है।

हमें अपने कर्तव्य का बोध है लेकिन कभी–कभी कष्ट होता है जब हमारे चिकित्सक अधिकारों के प्रति ज़्यादा जागरुकता दिखाते हैं लेकिन जब इन्हीं प्राप्त अधिकारों को उपभोग करने के लिये जिन कर्तव्यों की आवश्यकता होती है तब वह विमुख हो जाते हैं इस तरह के दोहरे व्यवहार से सफलता संदिग्ध रहती है।

प्रदेश में बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 और राष्ट्रीय स्तर पर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया इलेक्ट्रो होम्योपैथिक को तीव्रता से विकसित करने के लिये प्रतिबद्ध है।

सुधरेंगे मगर देरी से !

इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता दिलाने का बीड़ा ऐसा लगता है कि हर चिकित्सक ने अपने कंधों पर उठा रखा है इसीलिये जिसका जब जो मन करता है वह कर गुज़रनें में रत्ती भर भी पीछे नहीं रहता है, परिणाम यह होता है कि मान्यता के प्रथम पायदान पर तो वह पहुँच भी नहीं पाता अपितु जहाँ वह खड़ा है वहाँ से भी वह नीचे आने लगता है और कभी–कभी तो उस एक व्यक्ति का किया हुआ कृत्य लाखों को नुकसान पहुँचाने में सक्षम हो जाता है, वैसे आज तक का इतिहास साक्षी है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक को जो भी नुकसान पहुँचा है वह संस्था विशेष द्वारा किसी एक व्यक्ति द्वारा ही पहुँचाया गया है, किसी भी समूह ने इलेक्ट्रो होम्योपैथिक को कोई क्षति नहीं पहुँचायी है जो भी क्षति पहुँचती है वह अनावश्यक लिखा–पढ़ी के कारण ही पहुँचती हैं, पहले भी इस प्रकार की अनेकों हानियाँ हो चुकी हैं जिसकी भरपाई अभी तक नहीं हो पाई है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक समाज से जुड़ा हर व्यक्ति यह जानता है कि आज देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी से कार्य करने का एक स्वस्थ वातावरण उपलब्ध है यदि हम इलेक्ट्रो होम्योपैथी से कार्य करते हैं तो कार्य में किसी भी प्रकार का कोई भी हस्तक्षेप नहीं कर सकता है बशर्ते हम जिस राज्य में कार्य कर रहे हैं उस राज्य में कार्य करने के लिये प्रचलित नियमों और कानूनों का पालन कर रहे हों। अब जब कार्य करने का अधिकार प्राप्त है तो सम्बन्धित विभाग से अनावश्यक पत्र व्यवहार कर यह जानकारी प्राप्त करना कि क्या इलेक्ट्रो होम्योपैथी से कार्य करने का अधिकार है ?अब आप स्वयं विचार करें कि जब इस प्रकार के प्रश्न बार–बार किये जायेंगे तो कभी न कभी कोई अधिकारी झुंझलाकर यदि यह उत्तर देदे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी अधिकृत नहीं है तो सोचिये परिणाम क्या होगा ?जी हाँ ! हम आपको यह बताने का प्रयास कर रहे हैं कि अनर्गल और अनावश्यक जानकारियां क्या परिणाम दे सकती हैं ?आज कल इस प्रकार के प्रयास हमारे कुछ अति उत्साही नवजवान साथी इस तरह के कार्यों में कुछ ज़्यादा ही लिप्त हैं, उनकी यह लिप्तता उन्हें कितना लाभ पहुँचायेगी यह तो हमारे यही साथी बता पायेंगे हर इलेक्ट्रो होम्योपैथ को यह अंतिम सत्य स्वीकार कर लेना चाहिये कि जब तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता नहीं मिलती है तब तक भारत सरकार द्वारा 25 नवम्बर, 2003 को जारी आदेश में दिये गये निर्देशों के अनुसार ही कार्य करना होगा, जब सरकार आपके कार्य से संतुष्ट हो जायेगी तो सरकार मान्यता का मार्ग स्वयं प्रशस्त कर देगी इसलिये हर इलेक्ट्रो होम्योपैथ को यह समझ लेना होगा कि जो लोग ज़्यादा जानकारियां अर्जित कर रहे हैं वे इलेक्ट्रो होम्योपैथी के हित साधक नहीं हैं। इलेक्ट्रो होम्योपैथी का हित चाहने वाले सिर्फ कार्य को ही प्राथमिकता के आधार पर स्वीकार करते हैं और कार्य करते हुये इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता की राह आसान कर रहे हैं, जो लोग कार्य न करके सिर्फ अधिकारों की बात करते हैं उनको अपने कर्तव्यों का बोध अवश्य कर लेना चाहिये, जीवन में यदि सफला पानी है तो लघु मार्ग कभी भी लाभकारी नहीं होता है इसलिये लघु मार्ग की मानसिकता छोड़कर सिर्फ पूर्ण सफलता का विचार करना चाहिये। जो लोग इस तरह का प्रयास करते हैं वे तर्क दिया करते हैं कि हमें लोगों की उदासी देखी नहीं जाती इसलिये हम प्रयास करते हैं। ऐसे लोगों को यह समझ लेना चाहिये कि जो लोग सिर्फ अपने गौरवशाली अतीत में जीते हैं वह लोग उदास रहते हैं, जो सिर्फ अच्छे भविष्य की कल्पना में जीते हैं इसलिये निराश रहते हैं और जो वर्तमान में जीते है वे ही प्रसन्न रहते हैं।

हमारा वर्तमान जैसा भी है अच्छा है इसी अच्छे वर्तमान में काम करते हुये यदि हम अच्छे भविष्य की कामना करते हैं तो परिणाम सुखद ही होते हैं इसलिये देश में जो लाखों इलेक्ट्रो होम्योपैथ कार्य कर रहा है वह प्रसन्न मन से प्राप्त अधिकारों का उपभोग करते हुये स्वर्णिम भविष्य की तरफ़ बढ़ रहा है सफलता निश्चित है शासन और सरकार दोनों इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये सकारात्मक रुख अपनाये हुये है लेकिन यदि हम ही नहीं बदले तो सरकार क्या करेगी ?वज्ञान तो लगातार आगे बढ़ रहा है, नित्य नये–नये शोध हो रहे हैं यदि हमें प्रतिस्पर्धा में रहना है तो वास्तविक कार्य करना होगा, जो नहीं सुधर रहे हैं हमें आशा है कि वे भी ज़रुर सुधरेंगे लेकिन गति जितनी धीमी होगी परिणाम उतने ही देर से मिलेंगे।

बुज़ुर्ग बनाम युवा!

समाज में बुर्जुग और युवा दोनों समान रुप से उपयोगी हैं जिस समाज में बुर्जुग सोच का सम्मान नहीं होता है वह समाज स्वंय ही समाज से अलग हो एक नये समाज की रचना करता है, समाज को प्रगति के मार्ग पर ले जाने के लिये युवा एवं बुजुर्ग दोनों में सामंजस्य का होना अति आवश्यक है क्योंकि आज जो सोच पुरानी कही जा रही है कभी यही सोच युवा भी रही होगी और जो आज युवा हैं कल वह भी बुजुर्ग की श्रेणी में प्रवेश करेंगे, इस प्रकार से काल चक्र तो चलता ही रहता है, जो आज वर्तमान है कल वह अतीत होगा और धीरे–धीरे कालातीत हो जाता है, यह तो समय की गति है जो चलती रहती है और चलती रहनी है, जो इस गति में स्वंय को समाहित कर लेता है सफ़लता के पास पहुँच जाता है और जो किन्तु व परन्तु के चक्रव्यूह में फंसा रहता है वह व्यक्ति चक्रव्यूह का भेदन नहीं कर पाता, ज्ञानी व पराक्रमी होने के उपरान्त भी वीर अभिमन्यु की तरह अन्तरद्वन्द में फंसा हुआ अपनी आहुति दे देता है इसलिये अधुना व पुरातन दोनों सोचों का सम्मान करते हुये परिष्कृत परिणाम की ओर बढ़ना चाहिये। परन्तु आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी में युवा और बुजुर्ग सोच में सामन्जस्य स्थापित नहीं हो पा रहा है परिणामतः इलेक्ट्रो होम्योपैथी का विकास अवरुद्ध हो रहा है कारण जब चिन्तन में एकरुपता नहीं होगी तो कार्य में एकरुपता कैसे आ सकती है ?वैसे गत कई वर्षों से इलेक्ट्रो होम्योपैथी में नई और पुरानी सोच के मध्य एक रेखा सी खिंच गयी है ऐसे इलेक्ट्रो होम्योपैथ जो अपने आप को नई पीढ़ी का परिचायक के रुप में स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं वह कुछ नया करने के प्रयास में हर पुराने कार्य का विरोध कर रहे हैं और कभी–कभी विरोध इस स्तर का हो जाता है कि बाहरी व्यक्ति यह सोचने को मजबूर हो जाता है कि इनमें कोई प्रतिद्वन्दिता तो नहीं है ! जबकि सत्यता तो यह है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी में नई और पुरानी सोच में कोई टकराव है ही नहीं, जो कुछ भी है वह है प्रस्तुतिकरण का परिणाम, बुजुर्ग कौन होते हैं ?इसकी अलग– अलग परिभाषायें हैं कुछ लोग उम्र को बुजुर्ग मानते हैं और कुछ लोग कार्य को बुजुर्ग मानते हैं जबकि विज्ञान सिर्फ उस सोच को बुजुर्ग मानता है जो सबके लिये लाभकारी हो और विज्ञान की कसौटी पर खरा उतरे जब विज्ञान की बात आती है तब किन्तु या परन्तु की कोई गुंजाईश नहीं होती है, विज्ञान परिवर्तनीय होता है जो विचार आज बहुत लाभकारी दिखते हैं ज़रुरी नहीं वह सदैव इसी स्थिति में रहे, हो सकता है कल उसमें कुछ परिवर्तन आ जाये और जो परिवर्तन को स्वीकार कर लेता है और समय के साथ–साथ स्वंय भी परिवर्तन स्वीकार कर लेता है वह परिवर्तित रुप में सदैव स्वीकारणीय होता है, आज जो युवा इलेक्ट्रो होम्योपैथ खुले मंचों से यह तर्क देते हैं कि बुजुर्गों ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी को पूर्ण विकसित नहीं होने दिया उनका यह आरोप किसी भी तरह से सही नहीं ठहराया जा सकता है, जिन परिस्थितियों में हमारे बुजुर्ग साथियों ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी को सुरक्षित रखा है वह कम सराहनीय कार्य नहीं है, हर कार्य के पूरा होने का कोई समय होता है समय से पहले और समय के बाद कुछ भी नहीं होता है इलेक्ट्रो होम्योपैथी में जो कल था वह आज नहीं है और जो आज है वह कल बदलेगा नहीं ऐसा हो ही नहीं सकता लेकिन जिन सिद्धान्तों को लेकर काउण्ट सीज़र मैटी ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी की अवधारणा की थी उनको नकारना इलेक्ट्रो होम्योपैथी के अस्तित्व को नकारने जैसी बात है, हाँ ! यह ज़रुर है कि अट्ठारवीं सदी में जब मैटी ने इस पद्धति की खोज की थी तबकी अबकी परस्थिति में बहुत अन्तर आ चुका है हम उनके सिद्धान्तों में कुछ नये शोधों के साथ नये विकल्प रख सकते हैं लेकिन नये विकल्पों को लेकर पुरानों को भूल जाना किसी भी स्तर से न्यायोचित नहीं है, आयुर्वेद सदियों पुराना चिकित्सा शास्त्र है नित्य नये हो रहे शोध आयुर्वेद में जुड़ तो रहे हैं लेकिन नये की आड़ में जो आयुर्वेद का त्रिदोष (वात–पित्त–कफ़) सिद्धान्त है वह अभी भी उतना ही उपयोगी और प्रासंगिक है जितना उदभव के समय था महात्मा मैटी ने जिन 114 पौधों से इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधियों का निर्माण किया था उस पर नित्य नये शोध हो सकते हैं, नये पौधे जोड़े जा सकते हैं, नई औषधियां बनायी जा सकती हैं और नये कार्य भी हो सकते हैं लेकिन इन 114 पौधों को भुला दिया जाये यह किसी भी इलेक्ट्रो होम्योपैथ को स्वीकार नहीं होगा। आजकल नये इलेक्ट्रो होम्योपैथों द्वारा इन्हीं दोनों बिन्दुओं पर कार्य किया जा रहा है जोकि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को कोई भी दीर्घ कालिक लाभ नहीं दे सकते हैं अपितु इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये कुछ कठिनाईयां ज़रुर पैदा कर सकते हैं इलेक्ट्रो होम्योपैथिक की औषधियां कैसे बननी हैं और इन औषधियों का क्या गुणधर्म है ?यह सब कुछ जर्मन होम्योपैथिक फार्माकोपिया में समाहित है अब तो इस पर भी सवाल उठने लगे हैं, सब अपने–अपने हिसाब से इस विषय पर अपनी–अपनी राय ज़ाहिर कर रहे हैं, सोशलमीडिया पर भी इस विषय पर बहस होती रहती है, बहस यदि सकारात्मक हो तो बहस करने में आनन्द भी आता है लेकिन जब यही बहस स्तरहीन हो जाती है तो कष्ट तो होता ही है साथ–साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी की छवि भी धूमिल होती है इसलिये नया करने के फेर में हमारे साथी कुछ ऐसा कर गुज़रते हैं जोकि जग हँसाई का कारण बनता है, कभी–कभी मैटी के जन्म और मृत्यु पर भी सवाल उठने लगते हैं और इस प्रश्न पर भी बुजुर्गों को ही दोषी माना जाता है। हमारे कुछ साथी जो कार्य से तो ज़्यादा बुजुर्ग नहीं हैं लेकिन उम्र से बुजुर्ग हैं ऐसे व्यक्ति जब कुछ भी उलटा–सीधा कहते हैं तो समझदार इलेक्ट्रो होम्योपैथ उसे प्रलाप की संज्ञा देता है आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी विकास के रास्ते पर खड़ी है और यह विकास सिर्फ़ सकारात्मक कार्यों के माध्यम से ही हो सकता है, यदि पद्धति का विकास होगा तो उसका लाभ युवा और बुजुर्ग दोनों ही समान रुप से उठायेंगे, देखा जाये तो लाभ की श्रेणी में युवा ही ज़्यादा रहेंगे क्योंकि उम्र उन्हें ज़्यादा अवसर प्रदान करेगी इसलिये युवा और बुजुर्ग जैसे व्यर्थ की बातों से ऊपर उठकर सिर्फ़ कार्य की बात करें चूँकि ऐसा लगता है कि अधिकांश इलेक्ट्रो होम्योपैथों ने उम्र गुज़ारी है ज़िन्दगी नहीं जी है अब अवसर ज़िन्दगी जीने का आ रहा है तो आईये हमसब आपसी मतभेद को भुला कर युवा और बुजुर्ग की सीमाओं से ऊपर उठकर कार्य करते हुये जो अच्छा जीवन जीने का अवसर आ रहा है उसका हम भरपूर आनन्द लें।

आपस में सामंजस्य न रखने से समस्यायें जन्म ही लेती हैं और समस्यायें पैदा भी हो जाती हैं उनका समाधान सहभागिता के माध्यम से हो जाता है इसलिये देश में जितने भी इलेक्ट्रो होम्योपैथ हैं वह देश और काल का सम्मान करते हुये क्षेत्र, समाज, संगठन और अधिकारों की सीमाओं से ऊपर उठकर जो भारत सरकार ने हमें अधिकार दिये हैं उन अधिकारों का भरपूर उपयोग करते हुये आनन्दमय जीवन जीने की तरफ़ बढ़ें।

स्वंय भी विकसित हों और इलेक्ट्रो होम्योपैथी को भी विकसित करें।

पाँच लोग मिल जायें तो तस्वीर बदल दूंगा

यदि समान सोच के पाँच कर्मठ व्यक्ति मुझे मिल जायें तो मैं इलेक्ट्रो होम्योपैथी की तस्वीर बदल दूँगा यह विचार बिहार प्रान्त के वरिष्ठ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक डाक्टर आर0 सी0 प्रसाद ने बिहार प्रवास के दौरान बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के चेयरमैन डा0 एम0एच0 इदरीसी व इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के महासचिव डा0 प्रमोद शंकर बाजपेई से एक साक्षात्कार में व्यक्त किये, डा0 आर0 सी0 प्रसाद वयोवृद्ध चिकित्सक हैं लेकिन आज भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिये सक्रिय हैं, इनकी विचार धारा अलग है और कार्य करने का ढंग भी अलग है परन्तु इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास की चिन्ता उनको भी उसी प्रकार है जिस प्रकार अन्य लोगों को है। देश में संचालित हो रही पुरानी संस्थाओं में इनकी संस्था का नाम भी सम्मिलित है, इनको इस बात का दर्द है कि इतना काम करने के उपरान्त भी लोगों में अभी भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये वह समझ नहीं आयी है जो होनी चाहिये, डा0 आर0 सी0 प्रसाद के नाम से नये व पुराने इलेक्ट्रो होम्योपैथ भली भाँति परिचित होंगे लेकिन पिछले कई वर्षों से आप सामाजिक कार्यक्रमों में सहभागिता कम करते हैं इसलिये नई पीढ़ी इस नाम से कम परिचित है डा0 आर0 सी0 प्रसाद का जन्म इसी भारत भूमि में हुआ है, शिक्षा के बाद आप स्व0 डा0 नन्द लाल सिन्हा के सम्पर्क में आये और इलेक्ट्रो होम्योपैथी की बारीकियों को समझा,यौवनावस्था में ही आपका रुझान इलेक्ट्रो होम्योपैथी की ओर हो गया था चूँकि आपका पुराना सम्बंध परिवहन विभाग से भी रहा है (ऐसा लोग कहते हैं) इसलिये परिपक्वता जल्दी ही आ गयी 1977 में आपने बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक सिस्टम ऑफ मेडिसिन पटना, बिहार नामक संस्था का गठन किया जिसका कार्यालय आज भी करविगिहिया, पटना (बिहार) में स्थित है यहाँ पर डा0 आर0 सी0 प्रसाद आज भी नियमित रुप से बैठते हैं डा0 इदरीसी एवं डा0 बाजपेई ने इसी कार्यालय में बैठकर डा0 आर0 सी0 प्रसाद से इलेक्ट्रो होम्योपैथी की विभिन्न स्थितियों पर विस्तार से चर्चा की—

प्रश्नः— आज की इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थिति पर आपके क्या विचार हैं ?

प्रसाद जीः— स्थिति में क्या फ़र्क पड़ा है, लोग कल भी काम कर रहे थे आज भी काम कर रहे हैं बस ढर्रा बदल गया है, मनमानी हो गयी है, जिसकी जो मर्ज़ी होती है वह वैसा करता है।

प्रश्नः— आप तो काफ़ी वरिष्ठ हैं लोगों को समझाते क्यों नहीं ?

प्रसाद जीः— वरिष्ठ तो हैं ! राजा हैं।

प्रश्नः— इसका मतलब आप वर्तमान स्थिति से संतुष्ट नहीं हैं।

प्रसाद जीः— संतुष्ट होने या न होने से क्या फ़र्क पड़ता है, स्थिति खराब थी ही कब ?सब चाहिये।

प्रश्नः— डाक्टर साहब बिहार की स्थिति क्या है?

प्रसाद जीः— अरे बिहार क्या, यू0 पी0 क्या, सब जगह एक ही जैसी हालत है हमारे बिहार में काम करने का पूरा अवसर है, मनचाहे ढंग से काम करो लेकिन अब बिहार में पुरानी जैसी बात नहीं बची है, धीरे— धीरे पुराने लोग ढीले होते जा रहे हैं, प्रभाकर जी (सी0 डी0 मिश्रा) अब उतने सक्रिय नहीं रहे हैं, वह तो अब अपनी प्रैक्टिस पर ही मगन रहते हैं, लड़के भी ज़्यादा सक्रिय नहीं हैं, डा0 एम0 पी0 सिंह का कुछ अता—पता नहीं रहता है, डा0 सुदामा प्रसाद सिंह की अपनी अलग ढफली बजती है, उपेन्द्र बाबू किसी से सम्पर्क नहीं रखते, सब अपने—अपने ढंग से काम कर रहे हैं, कोई किसी से राय मशविरा तक नहीं करता है।

प्रश्नः— अब तो बिहार से काफ़ी नये—नये नाम चर्चा में आ रहे हैं।

प्रसाद जीः— अरे ये तो कल के लड़के हैं, ठीक काम कर रहे हैं, करने दीजिये।

प्रश्नः— आजकल बिहार से डा0 के0 पी0 सिन्हा और इनके बच्चों के नाम काफ़ी उछल रहे हैं ?

प्रसाद जीः— के0 पी0 सिन्हा को कितना जानते हैं आप ? 40 साल तो वह मेरे ऑफ़िस में रहा है आज 4 पैसे क्या कमा लिये तो के0 पी0 सिन्हा हो गया, अच्छी बात है काम कर रहा है सब अपना—अपना काम करें हमें क्या परेशानी है, हमने तो पौने दो लाख (1,75,000) डाक्टर बनायें हैं, सारी इण्डिया में हमारे ही डाक्टर काम कर रहे हैं, हमसे ज़्यादा इलेक्ट्रो होम्योपैथी का भला अखिर किसने किया है ?

प्रश्नः— डा0 के0 पी0 सिन्हा कैन्सर को लेकर कुछ ज़्यादा ही चर्चा में हैं।

प्रसाद जीः— कैन्सर क्या ठीक करेगा वह ! मैं दावा करता हूँ कैन्सर का कोई मरीज़ दर्द से कितना भी तड़पड़ा रहा हो उस टेबुल (कार्यालय में पड़ी एक मेज़ की ओर इशारा करते हुये) पर लिटा कर आधे घण्टे में दर्द दूर कर दूँगा, दूर—दूर से मरीज़ केवल नाम सुनकर आते हैं, उ0 प्र0 व दिल्ली का बहुत मरीज़ आता है।

प्रश्नः— डाक्टर साहब आप और डा0 इदरीसी तो समकालीन हैं फिर भी दोनों लोगों की कार्यशैली अलग—अलग है ?

प्रसाद जीः— बाजपेई जी आप कितनो दिनों से लगे हैं ?बहुत दिन हो गये, अरे भाई ! इदरीसी साहब चतुर निकले कुछ ली आये हम रहे सीधे—सादे वहीं के वहीं पड़े हैं।

प्रश्नः— मान्यता के लिये तो सरकार से सम्पर्क करना पड़ता है, अपनी बात कहनी पड़ती है ?

प्रसाद जीः— तो कीजिये न किसने मना किया है, हम तो डा0 एन0 एल0 सिन्हा के साथ बैठकर इलेक्ट्रो होम्योपैथी सीखी है, मुझसे ज़्यादा जानकार कौन है ? डा0 इदरीसी साहब सब जानते हैं, इनसे कुछ छिपा नहीं है, आजकल लोग—बाग दाई से पेट छिपाने जैसा काम करते हैं, रही बात समझाने की तो इस ज़माने में कौन किसकी बात सुनता है ? सभी मन के बेकार का प्रोपोगण्डा है, बाजपेई साहब ! यदि पाँच आदमी भी मेरी जैसी सोच के मिल जायें तो मैं इलेक्ट्रो होम्योपैथी की तस्वीर ही बदल दूँगा।

प्रश्नः— यह पाँच आदमी कैसे होंगे ?

प्रसाद जीः— कह दिया ना जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी का भला चाहता हो ऐसे ही पाँच आदमी

बिहार प्रान्त के वरिष्ठ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक डा0 आर0 सी0 प्रसाद

शेष अंतिम पेज पर

इहमाई का दायित्व बढ़ रहा है

वर्तमान परिस्थतियों में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की जो गति है उसमें तीव्रता लाने के लिये अब यह आवश्यक हो गया है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया अपने दायित्वों को और गति प्रदान करे और चतुर्दिक दृष्टि रखते हुये कड़े निर्णय ले, चूँकि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास में जो तत्व बाधक हैं उनसे कड़ाई से निपटना होगा पिछले कुछ दिनों से इलेक्ट्रो होम्योपैथी में ऐसे कार्य किये जा रहे हैं जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी की दिशा ही बदले दे रहे हैं, जो कार्य सकारात्मकता से सम्भव किये जा सकते हैं उन्हें कठिन बनाने का प्रयास किया जा रहा है ऐसी स्थिति में यह आवश्यक हो गया है कि मज़बूत, प्रभावी और कड़े निर्णय लिये जायें यह विचार इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा0 मुहम्मद हाशिम इदरीसी ने 25 जुलाई को इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के 38 वें स्थापना दिवस के अवसर पर कानपुर में आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किये, डा0 इदरीसी ने बताया कि इस समय पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की निगरानी का दायित्व इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के कंधों पर है, 21 जून, 2011 को भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय ने इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के प्रतिवेदन पर निर्णय लेते हुये एक आदेश जारी किया है जिसके आधार पर पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक शिक्षा, चिकित्सा व अनुसंधान का कार्य अधिकार पूर्वक किया जा सकता है और इस आदेश का अनुपालन सभी राज्य सरकारों व केन्द्र शासित प्रदेशों को भी करने का निर्देश है इस तरह से पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया ही एकमात्र ऐसी नीति नियामक संस्था है जो पूरे देश में संचालित हो रही इलेक्ट्रो होम्योपैथिक संस्थाओं के क्रिया कलापों की निगरानी करती है, कार्यक्रम का प्रारम्भ मैटी के चित्र पर माल्यार्पण से हुआ अतिथियों के स्वागत के बाद इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के महामंत्री श्री अतीक अहमद ने बताया कि आज से 38 वर्ष पूर्व 25 जुलाई, 1978 को कानपुर में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया का गठन किया गया था और यह निर्णय लिया गया था कि इस संगठन के माध्यम से इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के चिकित्सकों, छात्रों, औषधि निर्माताओं, विद्यालयों की समस्याओं के लिये कार्य किया जायेगा साथ-साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक को शासकीय संरक्षण दिलाने के लिये कार्य करेगा। लगातार संगठन अपने उद्देश्यों पर चलते हुये तमाम उतार चढ़ाव आये परन्तु इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया अडिग रहते हुये अपने उद्देश्यों से कभी नहीं भटका उसी का परिणाम है कि आज पूरे देश में एकमात्र इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया ही एक ऐसा संगठन है जो भारत सरकार से मान्यता प्राप्त है 21 जून, 2011 का आदेश आ जाने के बाद संगठन का दायित्व है कि अब हम और अधिकारिता के साथ कार्य करें इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के महासचिव डा0 प्रमोद शंकर बाजपेई ने कहा कि मज़बूत संगठन कठिन से कठिन कार्य को भी सुगमता से निपटा लेता है हमें इस बात का आत्म गौरव है कि हमारा संगठन निरन्तर आगे बढ़ रहा है और इलेक्ट्रो होम्योपैथिक की हर समस्याओं का समाधान भी ढूंढ रहा है लेकिन हमारे चिकित्सक अभी भी अपने दायित्वों को नहीं समझ रहे हैं, यह उदासी कभी भी ठीक नहीं है हर चिकित्सक को अपनी पूरी ऊर्जा का प्रयोग करते हुये कार्य करना चाहिये, भविष्य ठीक-ठाक है परन्तु वर्तमान में कार्य संस्कृति पनपाने के लिये सभी को मिल-जुल कर कार्य करना होगा, संगठन के संयुक्त सचिव डा0 मिथलेश कुमार मिश्रा ने कहा कि पूरे देश से लोग तरह-तरह की जानकारी लेते रहते हैं, अपनी समस्याओं से हमें अवगत कराते रहते हैं और हम भी बिना किसी भेद-भाव के हर व्यक्ति की समस्या के समाधान के लिये सदैव तत्पर रहते हैं संगठन उत्तरोत्तर विकास की तरफ बढ़ रहा है, हम आप सभी के सहयोग से सफलता की वह सीढ़ी अवश्य चढ़ेंगे जिसकी हम सबको इच्छा है। उदासी कभी भी ठीक नहीं है हर चिकित्सक को अपनी पूरी ऊर्जा का प्रयोग करते हुये कार्य करना चाहिये, भविष्य ठीक-ठाक है परन्तु वर्तमान में कार्य संस्कृति पनपाने के लिये सभी को मिल-जुल कर कार्य करना होगा, संगठन के संयुक्त सचिव डा0 मिथलेश कुमार मिश्रा ने कहा कि पूरे देश से लोग तरह-तरह की जानकारी लेते रहते हैं, अपनी समस्याओं से हमें अवगत कराते रहते हैं और हम भी बिना किसी भेद-भाव के हर व्यक्ति की समस्या के समाधान के लिये सदैव तत्पर रहते हैं संगठन उत्तरोत्तर विकास की तरफ बढ़ रहा ह।

हम आप सभी के सहयोग से सफलता की वह सीढ़ी अवश्य चढ़ेंगे जिसकी हम सबको इच्छा है।

महात्मा मैटी के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का उदघाटन करते हुये इहमाई के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा0 एम0 एच0 इदरीसी

डा0 मैटी के चित्र पर माल्यार्पण करते संयुक्त रुप से इहमाई के राष्ट्रीय महासचिव एवं संयुक्त सचिव

इच्छा है कि किताब पूरी कर लू- डा0प्रभाकर

जो किताब लिख रहा हूँ उसे भी पूरी कर लूँ बस यही एक इच्छा शेष है यह बात इलेक्ट्रो होम्योपैथी के मूर्धन्य विद्वान व वयोवृद्ध चिकित्सक पटना निवासी डा0 सी0 डी0 मिश्रा प्रभाकर ने पटना प्रवास के दौरान एक आशीर्वाद समारोह में संक्षिप्त भेंट वार्ता में व्यक्त की, डा0 मिश्रा गत वर्ष बिहार की राजधानी पटना में हुये सम्मेलन से क्षुब्ध दिख रहे थे बातों ही बातों में उनकी भावनाओं से दर्द छलक ही आया वे बातों ही बातों में कह गये कि पहले लोग धन और यश के साथ-साथ सेवा के लिये भी कार्य करते थे अब तो सिर्फ पैसा ही धर्म बचा है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थिति ठीक है जबतक हाथ-पैर चल रहे हैं मेरा प्रयास है कि लोगों को इलेक्ट्रो होम्योपैथी से शिक्षित कराता रहूँ।

बस इतना जानते हैं कि हमारे रजिस्ट्रेशन से पूरे देश में प्रैक्टिस कर सकते हैं।

प्रश्नः- प्रैक्टिस के लिये तो उस राज्य में पंजीयन आवश्यक है जहां काम करना है (बिहार प्रान्त का पंजीकृत चिकित्सक यदि अन्य किसी राज्य में प्रैक्टिस करना चाहता है तो उसे उसी राज्य के राज्य परिषद में पंजीकरण कराना होता है)।

प्रसाद जीः- हमें भी पता है लेकिन हमने कह दिया कि हमारी सर्टीफिकेट से पूरे देश में प्रैक्टिस कर सकते हो, ज़्यादा जानकारी चाहिये तो खुद पता लगाओ ! सब बराबर

पाँच लोग मिल जायें तो

------ तीसरे पेज से आगे

हैं, कोई अलग नहीं है।

प्रश्नः- आजकल आप सार्वजनिक मंचों पर नहीं जाते हैं ?

प्रसाद जीः- सही मंच मिलेगा तो जरुर जाऊंगा।

प्रश्नः- पिछले वर्ष पटना में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक का सम्मेलन हुआ था आप उसमें भी नहीं गये थे ?

प्रसाद जीः- काहे का सम्मेलन

प्रश्नः- सुना है कि आप किसी सरकारी कमेटी के सलाहकार बन गये हैं ?

प्रसाद जीः- हंसते हुये ! सुनते तो हम भी हैं, बम्बई वाले आये थे बता रहे थे कि आपको सलाहकार बना दिया गया है।

प्रश्नः- सलाहकार किस कमेटी के हैं ?

प्रसाद जीः- यह तो हमको भी नहीं पता।

प्रश्नः- आगे क्या करने का इरादा है ?

प्रसाद जीः- दिल्ली में सभी शीर्ष संस्थाओं के संचालकों की बैठक करुंगा।

प्रश्नः- बैठक कहाँ होगी और उसका एजेण्डा क्या है ?

प्रसाद जीः- अरे भाई दिल्ली में अपना मकान है, लड़कों के मकान हैं, बेटी का मकान है हमारी समधन हैं जो सांसद भी हैं, जगह की कौन कमी, कहीं कर लेंगे, रही बात एजेण्डे की समय आने पर अपनी नीति और रीति बतायेंगे।

प्रश्नः- इलेक्ट्रो होम्योपैथों को कोई संदेश देना चाहेंगे ?

प्रसाद जीः- सबलोग अपना-अपना काम करें सब ठीक हो जायेगा।

प्रश्नः- ठीक कैसे होगा ?

प्रसाद जीः- अरे भाई काम करेंगे तबतो कुछ होगा ना, बातें बनाने से तो काम नहीं चलता।